समझौता किस सरकार में हुआ है।

बंधुओं से लाभ लेने का आरोप है।

भारत ने 10 पुस्तकों का अनुवाद प्रस्तुत किया

बीजिंग, प्रेट्र : भारत ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के मुख्यालय में आधुनिक साहित्य पर भारतीय लेखकों की विभिन्न भाषाओं में लिखी 10 क्लासिक किताबों को अंग्रेजी, रूस और चीनी भाषा अनुवाद प्रस्तुत किया है। इस अवसर पर एससीओ के सचिवालय में इन पुस्तकों को चीन में भारत के राजदूत विक्रम मिसरी ने एससीओ के महासचिव व्लादिमीर नोरोव को पेश किया।

एससीओ में आर्थिक और सुरक्षा ब्लाक के आठ सदस्य देश चीन, रूस, कजाखस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, भारत और पाकिस्तान शामिल हैं। मंगलवार का यह प्रेजेंटेशन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वर्ष 2019 में बिश्केक में हुई एससीओ के प्रमुखों की बैठक में की गई घोषणा का फालोअप है। मोदी ने कहा था कि भारत की 10 महान रचनाओं का एससीओ की आधिकारिक भाषाओं रूसी और चीनी भाषा मंडारिन में अनुवाद किया जाएगा। साहित्य अकादमी के अनुसार अनुवाद के कार्य को पिछले साल के अंत में ही पूरा कर लिया गया था। भारतीय दूतावास एससीओ सदस्यों के पर्यवेक्षकों, वार्ताकारों और अन्य मिशनों को अनुवाद की गई इन पुस्तकों को वितरित करेगा। अनुवादित पुस्तकों में तारा शंकर बंद्योपाध्याय की लिखी आरोग्यानिकेतन (बांग्ला), राजेंद्र सिंह बेदी की ओरडेंड बाय फेट (उर्दू), रचकोंडा विश्वनाथ शास्त्री की लिखी ईलू (तेलुगु), निर्मल वर्मा की लिखी 'द लास्ट एक्जिट' (हिंदी), सैयद अब्दुल मलिक की लिखी लांगिंग फार सनशाइन (असमिया), मनोज दास की उड़िया में लिखी मिस्ट्री आफ द मिसिंग कैप व अन्य लघु कहानियां शामिल हैं। गुरदयाल सिंह की द लास्ट फिकर (पंजाबी), घेवरचंद मेघनानी की लिखी द प्रामिस्ड हैंड (गुजराती) भी शामिल हैं।

बीजिंग में मंगलवार को शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के महासचिव व्लादिमीर नोरोव को आधुनिक साहित्य पर भारतीय लेखकों की विभिन्न भाषाओं में लिखी 10 क्लासिक किताबों का अंग्रेजी, रूसी और चीनी भाषा में अनुवाद भेंट करते चीन में भारत के राजदूत विक्रम मिसरी। प्रेट्र

भारतीय साहित्य की 10 अनूदित पुस्तकें शंघाई सहयोग संगठन को भेंट

• अनूदित पुस्तकों में ताराशंकर बंदोपाध्याय द्वारा लिखी आरोग्य निकेतन (बांग्ला), राजेंदर सिंह बेदी की ओहंन्ड बाय फेट (उर्दू), रचकोंडा विश्वनाथ शास्त्री की इल्लु (तेलुगु), निर्मल वर्मा की द लास्ट एग्जिट (हिंदी), सयैद अब्दुल मलिक की लॉन्गिंग फॉर सनशाइन (असमी), मनोज दास द्वारा रचित मिस्ट्री ऑफ द मिसिंग कैप एंड अदर शॉर्ट स्टोरीज (उड़िया), गुरदियाल सिंह द्वारा लिखी गई द लास्ट फ्लिकर (पंजाबी), जयकनाथन की ऑफ मेन एंड मोमेंट्स (तमिल), एस एल भयरप्पा रचित पर्व : अ टेल ऑफ वॉर, पीस, लव, डेथ, गॉड एंड मैन (कन्नड़) और झावेरचंद मेघनानी द्वारा लिखी गई द प्रॉमिस्ड हैंड (गुजराती) शामिल हैं।

बीजिंग, 29 जून (भाषा)।

भारत ने प्रख्यात भारतीय लेखकों द्वारा अलग-अलग भाषाओं में लिखे गए आधुनिक साहित्य की 10 उत्कृष्ट कृतियों के अंग्रेजी, रूसी और चीनी अनुवाद मंगलवार को शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के मुख्यालय को भेंट किए। चीन में भारत के राजदूत विक्रम मिस्री ने ये पुस्तकें यहां एससीओ सचिवालय में एससीओ के महासचिव व्लादिमीर नोरोव को भेंट की। शंघाई सहयोग संगठन चीन, रूस, कजाखस्तान, किर्गिजस्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, भारत और पाकिस्तान से मिलकर बना आठ सदस्यीय आर्थिक व सुरक्षा गुट है।

मंगलवार को दी गई यह भेंट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2019 में बिश्केक में राष्ट्र प्रमुखों की एससीओ परिषद के शिखर सम्मेलन में की गई घोषणा के परिणामस्वरूप दी गई है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि भारतीय साहित्य की 10 सर्वश्रेष्ठ कृतियों का रूसी और चीनी भाषा में अनुवाद किया जाएगा जो एससीओ की आधिकारिक भाषाएं हैं। इसी के अनुसार साहित्य अकादमी ने अनुवाद परियोजना शुरू की थी और पिछले साल के अंत तक इसे पूरा कर लिया था। यहां भारतीय दूतावास अनूदित पुस्तकों को एससीओ सदस्य राष्ट्रों के दूतावासों, पर्यवेक्षकों, वार्ता साझेदारों और अन्य मिशनों को वितरित करेगा।

अनूदित पुस्तकों में ताराशंकर बंदोपाध्याय द्वारा लिखी आरोग्य निकेतन (बांग्ला), राजेंदर सिंह बेदी की ओहंन्ड बाय फेट (उर्दू), रचकोंडा विश्वनाथ शास्त्री की इल्लु (तेलुगु), निर्मल वर्मा की द लास्ट एग्जिट (हिंदी), सयैद अब्दुल मलिक की लॉन्गिंग फॉर सनशाइन (असमी), मनोज दास द्वारा रचित मिस्ट्री ऑफ द मिसिंग कैप एंड अदर शॉर्ट स्टोरीज (उड़िया), गुरदियाल सिंह द्वारा लिखी गई द लास्ट फ्लिकर (पंजाबी), जयकनाथन की ऑफ मेन एंड मोमेंट्स (तमिल), एस एल भयरप्पा रचित पर्व : अ टेल ऑफ वॉर, पीस, लव, डेथ, गॉड एंड मैन (कन्नड़) और झावेरचंद मेघनानी द्वारा लिखी गई द प्रॉमिस्ड हैंड (गुजराती) शामिल हैं।

नोरोव को भेंट करते हुए मिस्री ने इन पुस्तकों को 10 उत्तम रचनाओं के तौर पर वर्णित किया। उन्होंने उम्मीद जताई कि ये एससीओ सदस्य राष्ट्रों के बीच सांस्कृतिक संबंध को मजबूती देंगी।

उन्होंने कहा, 'आज, एससीओ सदस्य राष्ट्रों की युवा पीढ़ी इन्हें एकजुट करने वाले इतिहास के इन चिरस्थायी बंधनों से वाकिफ नहीं है। यह हमारी उम्मीद व आशा है कि भारतीय साहित्य के इन रत्नों के अनुवाद की छोटी सी पहल के माध्यम से हम उस समझ को आगे ले जाने में योगदान दें जोकि एससीओ सदस्यों राष्ट्रों के बीच सभी क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए बहुत जरूरी है।' नोरोव ने कहा कि ये पुस्तकें, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता को दर्शाती हैं, ये एससीओ के सदस्य राष्ट्रों के लोगों के बीच संबंधों को और मजबूत करेंगी।